

उपेंद्रनाथ अश्क के अंजो दीदी नाटक में अभिजात्य वर्ग की नारी

डॉ. अमित चहल

सहायक प्रोफेसर (हिंदी), ऋषिकुल महाविद्यालय गुरुग्राम।

Email amitchahal299@gmail.com

अभिजात्य वर्ग से अभिप्राय एक विशेष व्यक्ति से है जो धन संपदा सुख सुविधायों से संपन्न हो और विशेष अधिकार रखता हो। अंजलि भी इस नाटक में एक ऐसी नारी है जिसके अंदर यह बीज परंपरागत हैं। जो उसे अपने नाना की विरासत से मिले हैं अंजलि में अपने वर्ग की सभी प्रवृत्तियां शामिल हैं जो उसके अंदर हमेशा घर बनाए रहती हैं। अंजो एक ऐसी नारी है जो मनुष्य के जीवन को नियंत्रित और अनुशासित बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है वह मनुष्य को अपने विचारों के अनुसार रखना चाहती है आरंभ में ही नाटक के अंजो का अपने नौकरों के ऊपर नियंत्रण देखने को मिलता है। “मुन्नी नाशता रखो मेज पर तुम क्या कर रही हो? आठ बज गए हैं और नाशते का कहीं पता नहीं।¹

वह अपने बेटे नीरज को भी स्कूल के लिए तैयार होने को कहती है हड्डबड़ी में भनीरज बेटा कपड़े बदल लिए तुमने²

वह हर काम को समय पर चाहती है अगर वह काम उसे थोड़ी सी भी देरी लगे तो उसमें वह गुस्सा होती है। अगर उसके घर के नौकर साफ सुथरे कपड़े नहीं पहनते तो भी उन पर वह गुस्सा करती है और उन्हें साफ सुथरे कपड़े पहनने के लिए प्रेरित करती है।

अंजो को यह सब कुछ उसे विरासत में मिला है अगर कोई भी बात हो तो वह अपना नाना जी का उदाहरण बताती है सब कुछ उसके अंदर नाना को ही देखने को मिलता है।

“हमारे नाना जी कहां करते थे नौकरों को साफ सुथरा रखना चाहिए जैसे घर के भाग्य का पता चलता है वैसे ही मालिकों के सत्र का पता नौकरों के पहनावे से लगता है गंदे नौकरों से नाना जी को बड़ी चीड़ थी।³

हम देखते हैं कि अंजो भी अपने नाना की तरह ही अपने नौकरों को साफ सुथरा रखती है और अगर वह ऐसा नहीं करते तो मैं उनसे चिढ़ती है। अंजलि को अपने घर में सारा सामान अपनी जगह रखा हुआ होना चाहिए। हर चीज का अपना अपना निर्धारित समय है।

अंजो अपने पति को भी नियंत्रण अनुशासित करना चाहती है और उसके लिए वह अपनी दोस्त अनु को भी बताती है कि किस प्रकार से उसने अपने पति को ठीक रास्ते पर चलने हेतु भूख हड़ताल की। भ नाना जी कहां करते थे सदाचार पुरुष का भूषण है।⁴

उसका पति इंद्र नारायण भी उसकी बात मानने के लिए तैयार होता है वह कहता है कि भद्रनिया में दो तरह के लोग होते हैं एक हुए जो आप भी चलते हैं दूसरों को भी चलाते हैं इंजन की तरह

अंजो उनमें से है दूसरे वह जो आप नहीं चल पाए पर दूसरा कोई चलाएं तो उसके पीछे पीछे आराम से चल जाते हैं गाड़ी के डिब्बो की तरह हम तो इन दूसरी तरह के लोगों में से हैं।⁵

इस प्रकार अंजो की बात मानने के लिए भी इंद्र नारायण मजबूर हो जाते हैं और वह उनकी राह पर ही चलते हैं।

अंजू घर में साफ सफाई के लिए भी अपने भाई श्रीपत को खरी खोटी सुनाती है जब उसका भाई अ घर आता है तो वह अपने पैर मेज पर रखकर सो जाता है और शर्ट उतार कर एक तरफ फेंक देता है इस पर वह बहुत गुस्सा होती है।

भअरे रे रे क्या कर रहे हो श्रीपद तुम्हें शर्म नहीं आती देखो यहां अनु बैठी है और तुमने कुर्ता उतार कर फेंक दिया।⁶ वह अपने भाई श्रीपाद को खरी खोटी सुनती रहती है।

अंजो का लड़का नीरज की आयु मात्र दस वर्ष की वह मुझे डिप्टी कमिश्नर बनना चाहती है लेकिन वह स्वयं क्रिकेटर बनना चाहता है। तू है अपने बच्चों की भावनाओं को भी कहीं न कहीं दबाने का कार्य करती है क्योंकि वह क्रिकेट का कसान बनना चाहता है और उसकी मां उसे डिप्टी कमिश्नर बनाने में लगी हुई है।

श्रीपत उसकी मां जब उसे कहता है कि दो घंटे पढ़ो और 6 घंटे खेलो तो इस पर नीरज की मां क्रोधी होती है और श्रीपत को फिर से ताड़ती है भतुम चाहते हो मेरा बेटा भी तुम्हारी तरह आवारा हो जाए काम के नकाज के अदाई सेर नाज के।⁷

अंजो अपने पति अपने भाई और अपने बेटे किसी की नहीं सुनती वह केवल शाम के नियम कानून बनाकर उनके ऊपर थोपना चाहती है। जिससे मजबूरन उसके पति को मानना पड़ता है लेकिन श्रीपद उसका भाई इसका विरोध करता है तो वह अपने भाई को भी घर से जाने के लिए कहता है तो भी अंजोर गुस्सा होती है और कहती है कि इससे उनका पेट खराब हो जाएगा बाहर की चीज खाने योग्य नहीं होती जिससे इंद्र नारायण और उसके लड़के नीरज डरते डरते कुछ खा भी लेते हैं तो वह उनके ऊपर अत्यधिक क्रोधित होती है और अपने भाई को कहती है कि “दुनिया में तीन तरह के लोग होते हैं एक वह जो आप भी चलते हैं और दूसरों को भी चलाते हैं इंजन दूसरे वह जो आप नहीं चलते पर चलाओ तो चल जाते हैं गाड़ी के डिब्बो की तरह और तीसरे वह जो ना आप चलते हैं मैं दूसरों को चलने देते हैं ब्रेक की तरह नाना जी कहा करते थे श्रीपत।⁸

इस तरह अपने भाई को ब्रेक कहकर लड़ती है। एक दिन दीवार पर लगी घड़ी चाबी न दे देने की वजह से वह रुक जाती है। तो वह कहती है कि

“मेरे घर में ब्रेक का क्या काम? मेरा घर इसी घड़ी की तरह चलेगा लगातार शाम सवेरे घड़ी की टिक टिक टिक टिक और कोई चीज इस नियम को तोड़ न सकेगी।⁹

अर्थात् अंजो अपने घर को घड़ी की सुई की तरह चलना चाहती है वह उसे बिल्कुल नियमित अनुशासित और नियंत्रित रूप में रखना चाहती है। अंजू का पति अगर घर में शराब पीता अपने साल के साथ बाहर से समय के अनुसार न आता तो वह घर में झगड़ा करती। एक दिन जब इंद्र नारायण बाहर से दास्त पीकर आता है तो वह झूठ बीमारी का बहाना करती है फिर भी इंद्र नारायण के द्वारा दास्त न छोड़े जाने पर वह जहर खा कर मर जाती है और अपनी दोस्त के नाम दो चिट्ठी छोड़ती है जिसमें लिखा होता है कि मेरा यह मरना मेरे पति को ना बताया जाए उन्हें कहना कि मेरी मृत्यु मेरे पति की वजह से हुई है। इस प्रकार इंद्र नारायण स्वयं को एक कमरे में अपनी पत्नी की मृत्यु का दोषी मानकर शाम को बैरागी की तरह जीवन यापन करना शुरू कर दिया और अकेलेपन में ही अपना जीवन बिताने लग जाते हैं।

अर्थात् नाटक के अंत में पता लगता है कि किस प्रकार अंजू अपनी सनक से पूरे परिवार को बांध कर रखना चाहती थी। वह पूरे परिवार को घड़ी की सुई की तरह चलना चाहती थी।

उसे केवल और केवल अपनी विचारों को दूसरों के ऊपर थोपना था। उसे यह है न तो यह परवाह है कि उसका लड़का किस क्षेत्र में क्या बनना चाहता है क्या वह खाना चाहता है क्या वह पहनना चाहता है न ही उसे यह परवाह है कि उसका पति उससे क्या चाहता है वह केवल पूरे परिवार को एक इंजन के पीछे चलने वाले डिब्बो की तरह चलाना चाहती थी।

जो अंततः उसके पति द्वारा बात ने माने जाने पर मृत्यु को प्राप्त होने से पहले भी झूठी बीमारी का बहाना कर अपने पति के सिर अपनी मृत्यु का ठीकरा फोड़ देती है।

अंजू दीदी मनोविकारों के घात प्रतिघात और उनके प्रतिक्रिया की एक कहानी है दूसरे पर व्यक्तिगत विचारों का ओपन अपने में एक नैतिक पाप भी है अभिजात वर्ग की जिस जाति का शासन जी ने प्रस्तुत किया है वह कहीं ना कहीं समझ में व्यक्तियों में जीवन का एक अंश बनकर रह गया है मनुष्य के जीवन में आने वाली विकृतियों का उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अंजू दीदी नाटक के माध्यम से अभिजात्य वर्ग की स्थिति का वर्णन किया है।

चिंतन और सामाजिक दृष्टि से यह नाटक निषेधात्मक होते हुए भी रचनात्मक अधिक है जो मानव मूल्यों की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

1 उपेंद्रनाथ अश्क, अंजो दीदी नाटक, प्रथम संस्करण 1955, पृष्ठ 26

2 वहीं, पृष्ठ 27

3 वहीं, पृष्ठ 29

4 वहीं, पृष्ठ 34

5 वहीं, पृष्ठ 32

6 वहीं, पृष्ठ 37

7 वही, पृष्ठ 48

8 वही, पृष्ठ 64

9 वही, पृष्ठ 68